शिक्षा से संस्कृति व संस्कारों का संरक्षण

डॉ. आशा शर्मा

प्राचार्या

श्रीमती हेलेना कौशिक महिला शिक्षक

प्रशिक्षण महाविद्यालय, मलसीसर, झुन्झुनू

Corresponding Email: Email-sharma.asha934@gmail.com

मुख्य शब्द : शिक्षा संस्कृति संस्कार, संरक्षण

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति विश्व की सबसे प्राचीन संस्कृतियों में से एक है। सांस्कृतिक दृष्टि से भारत प्राचीन काल से ही समृद्ध रहा है। प्राचीन काल से वर्तमान तक हमारी संस्कृति ने पीढ़ी दर पीढ़ी निरन्तर जटिल सफर तय किया है। भारतीय संस्कृति का प्रत्येक अंश हमारी अमूल्य धरोहर है। विश्व जगत में इस विशेष संस्कृति के कारण ही भारत की अमूल्य पहचान है जो देश विदेशों को अपनी ओर आकर्षित करती रही है। आज लाखों लोग विदेशों से मीलों सफर तय करके भारतीय संस्कृति के दर्शन करने आते हैं। कुछ विदेशी सैलानी तो यहाँ की परम्पराएँ, रीति-रीवाजों, धार्मिक अनुष्ठानों एवं कलात्मक भारतीय संस्कृति को देखकर इस देश की संस्कृति के होकर रह जाते हैं। हम बहुत ही खुशनाशीब हैं जो हमें विरासत में अमूल्य संस्कार, नियम, उपनियम आदि मिले हैं इन संस्कारों को संजोए रखना तथा उनको समृद्धशाली बनाना हमारा परम कर्तव्य है। लेकिन वर्तमान समय में लगता है कि भारतीय संस्कृति पर पाश्चात्य आधुनिकता व पड़ोसी देशों का कुप्रभाव पड़ रहा है कि आज भारतवासी भौतिकवाद, उपयोगवाद और आधुनिकवाद के आडम्बर के कारण सत्यं शिवम् सुन्दर से कहीं दूर जा रहा है। आज भारतीय युवा पाश्चात्य एवं आधुनिकता के कुप्रभावों के दलदल में फँसता जा रहा है,

जिसका दुष्परिणाम आज समाज में देखने को मिल रहा है जैसे— दहेज हत्या, भ्रूण हत्या, बलात्कार, चोरी—डकैती, धार्मिक विरोध व धिनौनी राजनीति से निज स्वार्थ साधना आदि। इन कुप्रभावों के कारण भारतीय संस्कृति क्षीण हो रही है। आज हमारे विरोधाभास के कारण हमारे पड़ोसी देशों द्वारा छद्म चाल चली जा रही है। पड़ोसी देश नेपाल ने तो यहाँ तक कह दिया कि मर्यादा पुरुषोत्तम राम का जन्म नेपाल में हुआ है। श्रीराम एक नेपाली हैं भारतीयों की संस्कृति, संस्कारों की पहचान व आस्था की नगरी अयोध्या नकली है असली अयोध्या नेपाल में है। ये सब समृद्धशाली भारतीय संस्कृति, संस्कार, आध्यात्मिकता एवं सांस्कृतिक सौन्दर्य पर कुठाराघात है यदि हम संस्कृति एवं संस्कारों की शिक्षा युवाओं को नहीं दे सके तो इसके भयावह परिणाम हो सकते हैं जो कि हमारे देश की विश्वगुरु की पहचान पर एक चोट होगी साथ ही विश्व पटल पर भारत की छवि धीरे-धीरे धूमिल होगी।

संस्कृति व संस्कार

किसी भी देश की संस्कृति एवं सभ्यता से उस देश के धर्म, दर्शन, कला और साहित्य आदि की पहचान होती है किसी भी देश की संस्कृति उसकी आत्मा होती है। भारतवासियों में संस्कृति व संस्कारों से देश के प्रति बलिदान, चर-अचर प्राणियों की रक्षा, भातृभावना व समाज के प्रति उपकार की भावना रही है हमारे यहाँ संस्कारों का बीज तो प्राचीन समय में ही बोया गया था। राजा शिव के बलिदान को कौन नहीं जानता जिन्होंने एक कबुतर के प्राणों की

रक्षा के लिए अपनी जंघा का माँस काट-काटकर भूखे बाज को खिला दिया। इसी प्रकार महर्षि दधीचि की महान भावना से भी सभी परिचित हैं उन्होंने देवताओं की दानवों से रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी जिससे उनकी अस्थियों से वज्र का निर्माण कर असुरों का विनाश किया। हमारी पहचान हमारी संस्कृति एवं संस्कार हैं लेकिन जो राष्ट्र अपनी संस्कृति और संस्कारों से दूर हो गये उन्होंने अपनी पहचान खो दी। मिश्र, मसोपोटामिया व रोम ऐसे बहुत से राष्ट्र हैं जो अपनी सभ्यता

और संस्कृति नष्ट हो जाने से अपनी पहचान खो चुके हैं।

हमारा देश भी धीरे-धीरे इन राष्ट्रों की श्रेणी में आता जा रहा है इसका कारण यह है कि हमारी संस्कृति में समय के साथ आमूलचूल परिवर्तन हो रहे हैं। प्राचीनकाल से चले आ रहे रीति-रिवाजों, दीपोत्सव की जगह चाइनिज बल्ब, श्रावण के झूलों की जगह कृत्रिम झूलों, पहनावे में पाश्चात्य की नकल, खान-पान में फास्टफूड, भाइचारा न के बराबर, दादी माँ की लोरी विलुप्त हो गई और रिश्ते नाते मौसम की तरह बदल रहे हैं। विडम्बना की बात यह है कि जो विद्यालय एवं शिक्षक— शिक्षा से संस्कृति व संस्कारों का ज्ञान करता था उसका भी स्वरूप धीरे-धीरे बदल गया। शिक्षा आज ऑनलाईन होने से बालकों को शिक्षा कम तनाव व बीमारी ज्यादा दे रही है।

वर्तमान दौर में संस्कृति व संस्कारों का उदाहरण Covid-19 के दौरान देखने को मिले। पक्षी को महलों में नहीं अपने घोंसलों में सुकून मिलता है। Covid-19 आने से हमें अपने गाँव, परिवार सब याद आ गये शहरों की ऐशों आराम की जिन्दगी छोड़कर अपने गाँव, परिवार की ओर दौड़ने लगे क्योंकि सकंट के समय में एक साथ रहना और उसका सामना करना यही हमारी संस्कृति है इस दौरान सामाजिक संगठनों ने जगह-जगह भोजन, पानी, दवा, रहने की मदद कर मानवता धर्म व अपने संस्कारों का पालन किया वही दूसरी स्थिति भी देखने को मिली जो हमारे संस्कारों व संस्कृति का हिस्सा नहीं है जैसे:- दैनिक उपयोगी

सामान की कालाबाजारी, वाहनों का दुगूना व मदद मांगने पर उपहास करना जिससे बहुत लोगो को जिन्दगी से हाथ धोना पड़ा। अतः युवाओं को संस्कृति और संस्कारों से शिक्षित करना अत्यन्त आवश्यक है।

भारत को अपनी सांस्कृतिक—विरासत को बचाने के लिए अपनी शिक्षा को सुदृढ़ बनाना होगा शिक्षा ही संस्कृति की रक्षक एवं पोषक है। “शिक्षा बिजली के बल्ब की भांति है जहां तक बल्ब की रोशनी पहुंचती है वहां तक उजाला होता है और अंधकार दूर होता है, शिक्षा भी जहाँ तक पहुंचती है जीवन का अंधकार दूर कर जीवन में रोशनी पैदा करती है”। मनुष्य जब जन्म लेता है तब सिखने की प्रक्रिया जन्म लेती है। चाहे वह स्वयं शिक्षा प्राप्त करके अपने जीवन को आदर्श रूप से जिये या लोगो द्वारा प्रदान की जाने वाली शिक्षा से अपने जीवन में सांस्कृतिक शिक्षा की बड़ी भूमिका है जन्म से बालक पशुवत आचरण करता है उसके व्यवहार, आचरण, संस्कृति एवं संस्कारों का संरक्षण शिक्षा करती है गाँधी जी भी कहते हैं “ जो मुक्ति के योग्य बनाए, यही विद्या है अतः जो चित की शुद्धि न करे, मन व इन्द्रियों को वश में न करना सिखाए, निर्भयता तथा स्वावलम्बन उत्पन्न न करे, जीवन—निर्वाह का साधन न बताए दासता से मुक्ति और स्वतन्त्रता से रहने का उत्साह एवं सामर्थ्य पैदा न करे, उस शिक्षा में चाहे जितने ज्ञान का कोष, तर्क की कुशलता और भाषा की प्रवीणता उपस्थित क्यों न हो वह शिक्षा नहीं है?” शिक्षा देश की संस्कृति व संस्कारों की रक्षा करती है। संस्कृति रुपी रथ को एक पीढ़ी से दुसरी पीढ़ी

में परिवर्तित करती है जिससे संस्कारों के रूप में भावात्मक विकास, वैयक्तिक प्रगति, मानसिक उत्कृष्टता व सौन्दर्यता मानव जीवन में सम्भव हो पाता है। संस्कृति एवं सभ्यता को जीवित रखने के लिए 'शिक्षा' प्राणवायु का कार्य कर रही है इसलिए आज संस्कृति एवं सभ्यता को समृद्धशाली और हस्त पुष्ट बनाने के लिए 'अक्षर' शिक्षा की आवश्यकता नहीं सांस्कृतिक शिक्षा, आध्यात्मिक शिक्षा, वैदिक शिक्षा की अत्यन्त आवश्यकता है। कहने का तात्पर्य है कि शिक्षा के द्वारा हम एक सभ्य एवं संस्कृतिक राष्ट्र का निर्माण कर सकते हैं शिक्षा के द्वारा ही हमारी प्रवृत्तियाँ, विश्वास और विचार हमारे निर्णय और मूल्य, हमारी संस्थाएँ, हमारी नैतिक संहिताएँ और शिष्टाचार के नियम, हमारे विज्ञान तथा बहुत सी चीजे सुन्दर एवं आकर्षित बनाती है।

युवा पीढ़ी को भारतीय संस्कृति एवं संस्कारों का संरक्षण करने के लिए महत्वपूर्ण बिन्दु निम्नलिखित है—

01. युवाओं को अपनी निम्न प्रवृत्तियों पर सयंम और तप के द्वारा नियंत्रण रखना चाहिए।
02. युवाओं को भोग विलास से दूर रहकर शारीरिक और मानसिक दृष्टि से शुद्ध और उच्च जीवन व्यतीत करना चाहिए।
03. शिक्षा का आयोजन इस प्रकार से किया जाये कि वह विभिन्न जातियों, धर्मों के व्यक्तियों के मध्य पारस्परिक स्नेह, धैर्य व मित्रता उत्पन्न करने वाली है।
04. प्रत्येक युवा अपने सामुदायिक क्रिया कलापों में भाग लेकर सांस्कृतिक ज्ञान प्राप्त करें।

05. प्रत्येक राष्ट्र के व्यक्ति को अपनी सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण, सम्प्रेषण तथा सुरक्षा का अधिकार है, चाहे यह वैज्ञानिक या साहित्यिक हो।

06. युवाओं का लक्ष्य समाज के संस्कारों को सुरक्षित रखना और एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को सौपना है।

शिक्षा के द्वारा अपनी वर्तमान एवं भावी पीढ़ी को ऐसे नैतिक मूल्यों, संस्कृति व संस्कारों से परिचित कराना है अगर भारत अपनी सांस्कृतिक विरासत को सम्भालने में शीघ्र ही जागृत नहीं हुआ तो भारत वर्ष से मर्यादा, नैतिकता और मानवता की पोषक भारतीय संस्कृति व संस्कारों का नाम मिट जायेगा। इसलिए शिक्षा का उद्देश्य सांस्कृतिक विकास होना चाहिए। संस्कृति एवं संस्कार शिक्षा का महत्वपूर्ण लक्ष्य है शिक्षा बालक के शारीरिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक विकास का एक साधन है।

सन्दर्भ ग्रन्थः—

01. आधुनिक भारत का इतिहास— शर्मा एवं व्यास— पंचशील प्रकाशन, जयपुर।
02. उदयमान भारतीय समाज एवं शिक्षा—डॉ. एन आर शर्मा, डॉ. शुक्ल—शिक्षा प्रकाशन, जयपुर।
03. शिक्षा में नवचिन्तन— प्रो. रिता अरोड़ा— शिक्षा प्रकाशन, जयपुर।
04. शिक्षा के सिद्धान्त— डॉ. सन्ध्या अग्रवाल— विजय प्रकाशन मन्दिर।
05. प्रतियोगिता दर्पण— नई दिल्ली।
06. क्रॉनोलोजी— भरतपुर।
07. दैनिक भास्कर— जोधपुर।
08. www.educatio.com